



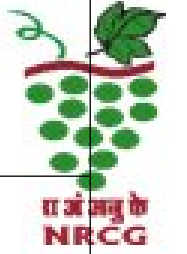
भारतीय कृषी संशोधन परिषद-राष्ट्रीय द्राक्ष संशोधन केंद्र

या आठवड्यातील हवामान अंदाज

गुरुवार (16/07/2026) – बुधवार (22/07/2026)



| स्थान   | तापमान (°C) |       | पावसाची शक्यता                                                                                                                                                                                                                                                        | ढगांचे आच्छादन | वाऱ्याचा वेग (किमी/तास) किमान-कमाल | सापेक्ष आर्द्रता % |
|---------|-------------|-------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------|------------------------------------|--------------------|
|         | किमान       | कमाल  |                                                                                                                                                                                                                                                                       |                |                                    |                    |
| नाशिक   | 22-23       | 25-29 | नाशिक, ओझर, कळवण, पिंपळगाव बसवंत, दिंडोरी, पालखेड – गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध – रिमझिम ते हलका पाऊस; लोणी – शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध – रिमझिम ते हलका पाऊस; वणी – गुरु, शुक्र, शनि, बुध – रिमझिम ते हलका पाऊस.                                     | स्वच्छ ते ढगाळ | 26-36                              | 69-82              |
| पुणे    | 23          | 26-29 | पुणे, फुरसुंगी, लोणी काळभोर, उरुळी कांचन, पाटस, यवत, नारायणगाव- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध- रिमझिम ते हलका पाऊस इंदापूर- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध- हलका ते मध्यम पाऊस. बारामती- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम – रिमझिम पाऊस                      | स्वच्छ ते ढगाळ | 20-27                              | 70-81              |
| सोलापूर | 21-22       | 25-28 | सोलापूर- शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध - रिमझिम पाऊस; वैराग, औसा, बाशी- गुरु, शनि, रवि, सोम, बुध- रिमझिम पाऊस. नागज- शुक्र, शनि, बुध- रिमझिम पाऊस. लातूर- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, बुध- रिमझिम पाऊस. तुळजापूर- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध - रिमझिम ते हलका | स्वच्छ ते ढगाळ | 14-25                              | 74-86              |

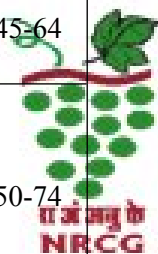


|          |       |       |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                |       |       |
|----------|-------|-------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------|-------|-------|
|          |       |       | पाऊस; पंढरपूर- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध- हलका ते मुसळधार पाऊस                                                                                                                                                                                                                                                                                   |                |       |       |
| सांगली   | 22-23 | 27-29 | मिरज, सांगली - गुरु, शुक्र, शनि, मंगळ, बुध- रिमझिम पाऊस. शेटफळ- गुरु, शनि, रवि, सोम, बुध- रिमझिम पाऊस; शिरगुप्पी- गुरु, शुक्र, शनि, मंगळ, बुध- रिमझिम पाऊस; कवठा, वाळवा-गुरु, शुक्र, शनि, रवि, बुध- रिमझिम पाऊस; खानापूर विटा- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध- रिमझिम ते हलका पाऊस; पळशी, पलूस- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ- रिमझिम ते हलका पाऊस | स्वच्छ ते ढगाळ | 26-39 | 62-77 |
| विजयपुरा | 22-23 | 30-33 | चडचन, तिकोटा, तेलसांग, विजयपुरा - गुरु, रवि, सोम- रिमझिम पाऊस.                                                                                                                                                                                                                                                                                               | स्वच्छ ते ढगाळ | 32-51 | 45-64 |
| हैदराबाद | 22-24 | 28-32 | हैदराबाद, मेदचल - गुरु, शुक्र, शनि, रवि, बुध - रिमझिम ते हलका पाऊस. झहिराबाद - गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध - रिमझिम ते हलका पाऊस.                                                                                                                                                                                                                  | स्वच्छ ते ढगाळ | 09-26 | 50-74 |
| सातारा   | 21-22 | 25-28 | खटाव, सातारा - शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध - रिमझिम ते हलका पाऊस. फलटण - गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम - रिमझिम पाऊस.                                                                                                                                                                                                                                       | स्वच्छ ते ढगाळ | 14-25 | 74-86 |
| अहमदनगर  | 22-23 | 28-31 | अहमदनगर, संगमनेर, श्रीगोंदा, राहाता, कोपरगाव, अकोले - गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध- रिमझिम ते हलका पाऊस. जामखेड- गुरु, रवि, सोम, मंगळ, बुध - रिमझिम ते हलका पाऊस. कर्जत- गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध - हलका ते जोरदार पाऊस.                                                                                                               | स्वच्छ ते ढगाळ | 30-46 | 54-72 |
| जालना    | 23-24 | 30-34 | जालना, अंबड, घनसावंगी - गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, बुध - रिमझिम ते हलका                                                                                                                                                                                                                                                                                     | स्वच्छ ते ढगाळ | 18-36 | 43-62 |



भारतीय कृषि  
ICAR-National

राष्ट्रीय संशोधन केंद्र, पुणे  
Grapes, Pune



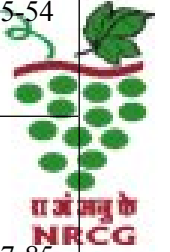
|                    |       |       |                                                                                                                                                                                                 |                   |       |       |
|--------------------|-------|-------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------|-------|-------|
|                    |       |       | पाऊस. मंठा - शनि, रवि, बुध - रिमझिम<br>पाऊस. जाफराबाद - शुक्र, शनि, रवि, सोम,<br>मंगळ, बुध - रिमझिम ते हलका पाऊस.                                                                               |                   |       |       |
| बुलडाणा            | 23-24 | 29-33 | बुलडाणा - गुरु, सोम, बुध - रिमझिम पाऊस;<br>सिंदखेड राजा, देऊळगाव राजा - गुरु, शुक्र,<br>शनि, रवि, सोम, बुध - रिमझिम ते हलका<br>पाऊस; चिखली - गुरु, शुक्र, शनि, रवि,<br>मंगळ, बुध - रिमझिम पाऊस. | स्वच्छ ते<br>ढगाळ | 25-41 | 44-74 |
| कोल्हापूर          | 22    | 26-28 | कागल, करवीर, गमनबावडा - गुरु, शुक्र,<br>शनि, रवि, सोम, मंगळ, बुध - रिमझिम ते<br>हलका पाऊस.                                                                                                      | स्वच्छ ते<br>ढगाळ | 20-32 | 70-84 |
| बंगळुरु<br>ग्रामीण | 20    | 28-32 | अनकल, दोड्डाबल्लापूर, बेंगळुरु -पूर्व,<br>बेंगळुरु-उत्तर, बेंगळुरु- गुरु, शुक्र, शनि,<br>रवि, सोम, मंगळ - रिमझिम ते हलका<br>पाऊस.                                                               | स्वच्छ ते<br>ढगाळ | 17-23 | 35-54 |
| बेळगावी            | 20-21 | 25-27 | बेळगावी, गोकाक- गुरु, शुक्र, शनि, रवि,<br>सोम, मंगळ, बुध - रिमझिम ते हलका<br>पाऊस. चिकोडी- गुरु, शुक्र, शनि रवि, बुध -<br>रिमझिम पाऊस. अथनी- गुरु, शुक्र, शनि,<br>मंगळ, बुध - रिमझिम पाऊस       | स्वच्छ ते<br>ढगाळ | 19-29 | 67-85 |
| बिदर               | 23-24 | 29-33 | बिदर - गुरु, शुक्र, शनि, रवि, सोम, मंगळ,<br>बुध- रिमझिम ते हलका पाऊस. हुमनाबाद,<br>बसवकल्याण- गुरु, शुक्र, शनि रवि, बुध -<br>रिमझिम पाऊस                                                        | स्वच्छ ते<br>ढगाळ | 10-22 | 51-69 |
| बागलकोट            | 22-23 | 29-33 | बागलकोट, हुंगुंड, जमखंडी, मुधोळ- गुरु,<br>रवि, सोम- रिमझिम पाऊस.                                                                                                                                | स्वच्छ ते<br>ढगाळ | 32-52 | 45-64 |

टीप: वरील हवामान माहिती खालील संकेतस्थळांवर दिलेल्या हवामान अंदाजाचा सारांश आहे

[https://www.wunderground.com/?cm\\_ven=cgi](https://www.wunderground.com/?cm_ven=cgi)

<https://imd.grimmet.gov.in/weatherdata/BlockWindow.php>

<https://www.timeanddate.com/weather/india>



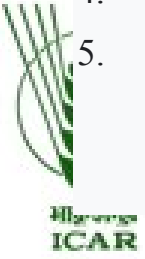
भाकृअनुप-राष्ट्रीय द्राक्ष संशोधन केंद्र अचूकतेचा दावा करत नाही.

## ॥ पाणी व्यवस्थापन

अपेक्षित पॅन बाष्पीभवन: 5 -7 मिमी

शिफारस केलेले सिंचन प्रमाण:

1. अनेक भागात रिमझिम ते हल्का/ मध्यम पाऊस पडण्याची शक्यता आहे. जर माती वाप्सा (क्षेत्र क्षमता) स्थितीत असेल तर द्राक्षबागेला पाणी देऊ नये.
2. सुक्ष्म घड निर्मिती च्या अवस्थेत, अंकुर वाढ नियंत्रित करण्यासाठी सिंचन पाणी 2800 ते 4000 लिटर / एकर / दिवस असावे.
3. सुक्ष्म घड निर्मिती च्या अवस्थेसाठी, ताण देणे आवश्यक आहे. चिकणमातीत मातीत पाणी धरून ठेवण्याची क्षमता जास्त असल्याने, कृपया लक्षात घ्या की ताण लवकर लादला जाणे आवश्यक आहे अन्यथा फलनक्षमतेवर परिणाम होईल.
4. केन परियक्वता अवस्था: पृष्ठभागावर ठिबकद्वारे @ 2800 ते 4000 L/एकर प्रतिदिन पाणी द्यावे.
5. पावसाळ्यात पाऊस पडल्यास, बांधावरील पालापाचोळा काढून टाका आणि पावसाचे पाणी जमिनीत मुरु द्यावे. यामुळे रूटझोनमध्ये जमा झालेले क्षार बाहेर पडतील. अशा प्रकारे काढलेला पालापाचोळा जमिनीत मिसळून जमिनीची सच्छिद्रता वाढवता येते.



**माती आणि पोषक व्यवस्थापन :**

अनेक द्राक्ष उत्पादक भागात पावसाची संततधार सुरू आहे आणि पुढेही पावसाची शक्यता आहे. माती आधीच संतृप्त आहे. यामुळे रूटिंग क्रियाकलापांवर परिणाम झाला आहे. दीर्घकाळ संपृक्ततेमुळे, मुळे कुजण्यास सुरुवात झाली असावी. रूट झोनमधील मातीला त्रास देऊ नका. मातीशी संबंधित कोणताही हस्तक्षेप करण्यापूर्वी माती वाप्सा स्थितीत येईपर्यंत प्रतीक्षा करा. वाढ मंद होईल पण काळजी करू नका. वाप्सा नंतरच खताचा वापर करावा.

**सुक्ष्म घड निर्मिती अवस्था:**

1. माती परीक्षण मूल्यांवर आधारित, जमिनीत फॉस्फरसची कमतरता असल्यास 20 - 25 किलो / एकर फॉस्फोरिक ऍसिड किंवा 150 किलो / एकर एसएसपी वापरावा. चुनखडीयुक्त जमिनीत फॉस्फोरिक ऍसिड वापरणे इष्ट आहे. जोपर्यंत माती आणि पेटीओल चाचण्या कमी फॉस्फरसची उपलब्धता दर्शवत नाहीत तोपर्यंत फॉस्फोरिक ऍसिड देऊ नये.

2. नायट्रोजन असलेले कोणतेही पाण्यात विरघळणारे खत घालू नये.
3. 45 दिवसांनंतर, वेलीतील पोषक घटक जाणून घेण्यासाठी पेटीओल चाचणी करावी. अंकुराच्या पायथ्यापासून 5 व्या पानापासून पेटीओल्स काढले गेलेल्या पानांची मोजणी करून गोळा केले जावे.
4. मॅग्नेशियम सल्फेट 15 किलो / एकर 45 ते 55 दिवसांनंतर च्या कमीत कमी 2 भागामध्ये वापरा.
5. चुनखडीयुक्त जमिनीत, मॅग्नेशियम सल्फेट आणि पोटॅशियम सल्फेट 3 ग्रॅम / एल 45 ते 55 डीएपी दरम्यान फक्त एकदा फवारणी करावी.
6. सिंचनाच्या पाण्यात 100 पीपीएम पेक्षा जास्त सोडियम असल्यास पाने काळे होण्याच्या लक्षणांवर बारीक लक्ष ठेवावे.
7. पान कुरळे होण्याची शक्यता असल्यास, पानांचे मार्जिन तपासावे, जर थोडे ते जास्त पिवळे असल्यास पोटॅशियमची कमतरता होण्याची शक्यता असते. अशावेळी सल्फेट ऑफ पोटॅश ची 3 ग्रॅम / लिटर ची पर्णासंबंधी फवारणी करावी आणि त्यानंतर 2 ते 3 भागामध्ये 20-25 किलो सल्फेट ऑफ पोटॅश / एकर फवारणी करावी.
8. जंबो, नानासाहेब पर्पल इत्यादी रंगीत जातींमध्ये पोटॅशियमची कमतरता असल्यास पानांचे कुरळेपणा आणि पानांच्या मार्जिनचे लालसर/कांस्थीकरण दिसून येते. अशावेळी सल्फेट ऑफ पोटॅश ची 3 ग्रॅम / लिटर ची पर्णासंबंधी फवारणी करावी आणि त्यानंतर 2 ते 3 भागामध्ये 20-25 किलो सल्फेट ऑफ पोटॅश / एकर फवारणी करावी.
9. जर हवामानाच्या अंदाजानुसार चांगल्या पावसाचा अंदाज असेल, तर पावसाच्या आगमनापूर्वी, छतच्या आकारानुसार SOP @ 4-5g/L ची पर्णासंबंधी फवारणी करा.

### केन परिपक्वता अवस्था

1. सध्याच्या पावसानंतर, कॅनोपी नुसार सल्फेट ऑफ पोटॅश 4-5 ग्रॅम / ली ची फवारणी करावी.
2. पोटॅशियमचा वापर केन परिपक्वतेच्या अवस्थेपासून आवश्यक आहे. अंदाजे या अवस्थेत 64 किलो सल्फेट ऑफ पोटॅश (विद्राव्य दर्जाचे) द्यावे. पोटॅशियमचे लीचिंग नुकसान कमी करण्यासाठी किमान पोटॅशियमच्या डोसचे पाच डोसमध्ये विभाजन करावे. या आठवड्यात 15 किलो सल्फेट ऑफ पोटॅश दोन-तीन स्प्लिटमध्ये द्यावे. चुनखडीयुक्त जमिनीत, या वाढीच्या अवस्थेत एकदा सल्फेट ऑफ पोटॅश ( 4 ग्रॅम / ली) द्यावे.

3. मॅग्नेशियम सल्फेट 15 किलो/एकर दोन भागांमध्ये वापरावे. छाटणीनंतर 60-75 दिवसांच्या दरम्यान द्यावा. चुनखडीयुक्त जमिनीत, या वाढीच्या अवस्थेत मॅग्नेशियम सल्फेट (3 ग्रॅम / ली) द्यावे.
4. चुनखडीयुक्त मातीत जेथे लोहाची तीव्र कमतरता दिसून येते, 3 दिवसांच्या अंतराने 2-3 ग्रॅम / ली फेरस सल्फेटची दोन ते तीन वेळा फवारणी करावी आणि त्यानंतर ठिबकद्वारे 15-20 किलो/एकर फेरस सल्फेट वापरावा. फर्टिगेशन डोस प्रत्येकी 5 किलोच्या किमान 3 डोसमध्ये विभागता पाहिजे.
5. चुनखडीयुक्त जमिनीचे प्रभावी व्यवस्थापन करण्यासाठी, दर आठवड्याला ठिबकद्वारे 5 किलो/एकर विद्राव्य गंधक टाकावे. तसेच मॅग्नेशियम सल्फेट आणि पोटॅशियम सल्फेट 3 ग्रॅम / एल फक्त एकदाच फवारणी करावी.
6. पावसामुळे आणि प्रतिबंधात्मक नियंत्रणासाठी बोर्डेक्स किंवा तांब्याच्या फवारण्या दिल्यास, कृष्णा सीडलेस इत्यादी रंगीत जातींमध्ये पाने लाल होण्याची शक्यता असते. कोणताही विशिष्ट नमुना नसतो. हे तांब्याच्या विषारीपणामुळे असू शकते. अशावेळी तांबे फवारणी करावी.
7. जर हवामानाच्या अंदाजानुसार चांगल्या पावसाचा अंदाज असेल, तर पावसाच्या आगमनापूर्वी, छतच्या आकारानुसार SOP @ 4-5g/L ची पर्णासंबंधी फवारणी करा.
8. केन परिपक्वता झाल्यानंतर हिरवळीच्या खतासाठी सनहेम किंवा धेंचा वाढवा.



भारतीय  
ICAR



राज्य  
NRCG

### छाटणीपूर्व अवस्था - फळ छाटणीचा हंगाम

1. ऑगस्ट-सप्टेंबरमध्ये छाटणीचे नियोजन केले असल्यास, हिरवळीच्या खतासाठी सनहेम किंवा धेंचा वाढवा.
2. जर पुढील 10-15 दिवसांत खरड छाटणीचे नियोजन केले असेल, तर खरड छाटणीच्या हंगामासाठी पोषक तत्त्वे आणि पाणी वापराचे वेळापत्रक नियोजन करण्यासाठी माती आणि पाण्याचे परीक्षण करण्याचा सल्ला दिला जातो.
3. ज्या द्राक्षबागांमध्ये सोडियमची समस्या आहे, तेथे माती एक्सचेंज कॉम्प्लेक्समधून सोडियम काढून टाकण्यासाठी जमिनीत जिप्सम टाकावा. चुनखडीयुक्त जमिनीच्या बाबतीत, सल्फरचा वापर तत्सम कारणासाठी करावा. अर्ज शेणखत/कंपोस्ट इत्यादींसोबत असावा. ते जमिनीत मिसळावे आणि वरच्या बाजूला सोडू नये.

4. जर माती चुनखडीयुक्त असेल तर जमिनीतील वेलींमध्ये 50 किलो/एकर सल्फर टाकावा. कॅल्शियम कार्बोनेटची काळजी घेण्यासाठी त्याची कार्यक्षमता वाढवण्यासाठी गंधक जमिनीत व्यवस्थित मिसळले पाहिजे. शेणखत/ कंपोस्टमध्ये गंधक मिसळल्याने त्याची कार्यक्षमता आणखी सुधारते.
5. चुनखडीयुक्त जमिनीच्या बाबतीत, एसएसपी बेसल डोस म्हणून वापरल्यास, फॉस्फरस स्थिरीकरण टाळण्यासाठी शेणखत/कंपोस्ट इत्यादी मिसळा.

### III. कॅनोपी व्यवस्थापन

हवामानाच्या परिस्थितीनुसार आणि द्राक्षवेलीच्या वाढीच्या टप्प्यांचा विचार करून, या आठवड्यात द्राक्षबाग व्यवस्थापनासाठी खालील सूचना दिल्या जात आहेत.

#### अ) द्राक्षबाग:

1. गेल्या आठवड्यात पडलेल्या पावसामुळे सापेक्ष आर्द्रता वाढली आहे, ज्यामुळे वेलीची वाढ वाढण्यास मदत होईल.
2. द्राक्षवेलीची शेंडा वाढ अधिक होईल. म्हणून वेलीची शेंडा वाढ कमी करण्यावर प्राधान्य द्यावे.
3. त्याच बरोबर वेलीच्या बगल फूटी निघू लागल्याने भुरक्या रोगाची शक्यता वाढते. त्यासाठी कोब चिमट काढणे आणि कोंबांना तारेवर प्रशिक्षण देणे आवश्यक आहे. यामुळे कॅनोपीमधील सापेक्ष आर्द्रता कमी होईल आणि सूक्ष्म हवामान नियंत्रित राहील.
4. लवकर कॅन परिपक्वता महत्त्वाची आहे, वेलीची शेंडा वाढ व वेलीच्या बगल फूटी कमी करण्यावर प्राधान्य द्या. यामुळे कॅनोपीमध्ये सूर्यप्रकाश आणि योग्य वायूनिमय होईल.
5. पोटॅशची मात्रा देणे आणि सिंचनाचे पाणी कमी करणे यामुळे कॅन परिपक्वता लवकर येईल.
6. द्राक्षबागेत कोंबांच्या तळाशी दुधासारखा पांढरा रंग दिसणे हे कॅन परिपक्वतेच्या सुरुवातीचे लक्षण आहे. सिंचन कमी करणे आणि पोटॅशियम स्प्रे देणे यामुळे कॅन परिपक्वता वेगवान होईल.
7. आर्द्र हवामानात जैविक उपचारांची फवारणी रोग नियंत्रणासाठी उपयुक्त ठरेल.



भारतीय कृषी संशोधन परिषद-राष्ट्रीय द्राक्ष संशोधन केंद्र, पुणे  
ICAR National Research Centre for Grapes, Pune



8. आर्द्र परिस्थितीत मुख्य (टायगर) डोळा फुटणे दिसू शकते आणि ही समस्या विशेषतः खालच्या बाजूने परिपक्व होणारे शूटमध्ये अशा बागांमध्ये जास्त दिसते. याचे कारण पाण्याची कमतरता किंवा साइटोकिनिन आधारित संजीवके (PGR) चा अतिरेक असू शकते. अचानक आर्द्रतेमुळे आतील जिबरेलिनस वाढल्याने शाखिय वाढ होते.
9. ज्या बागांमध्ये ओलांडाचा विकास सुरु आहे, त्यात शेवटचा शूट कॉर्डनवर बांधावा आणि 4 ते 5 पानांवर पिंच करावा.
10. फळ मुकुल विभेदनासाठी ६ बीए @ 10 पिपीएम आणि युरासिल @ 25 पिपीएम ची फवारणी करणे आवश्यक आहे कारण सध्याचे हवामान बऱ्याच ठिकाणी अनुकूल नाही. शिफारस केलेल्या मात्रेत 6BA आणि Uracil ची फवारणी करावी.

11. बगलफुटी निघू लागल्यावर P आणि K ग्रेड खताची २ ते २.५ ग्रॅम प्रति लिटर पाण्यात फवारणी करावी.

ब) रुटस्टॉक व्यवस्थापन

1. शूट विरळणी करावे, 3 ते 4 निरोगी, सरळ वाढणारे शूट ग्रापिटिंगसाठी ठेवावेत.
2. रुटस्टॉकशूटची जाडी 1.25 फूट उंचीवर 8 ते 10 मिलिमीटर असावा.
3. रुटस्टॉकवरील बुगलफुटी काढावेत जेणेकरून ग्रापिटिंगसाठी आवश्यक जाडी प्राप्त होईल.

#### IV. रोग व्यवस्थापन

| खरड छटणी<br>नंतरचे<br>दिवस | रोगांचा धोका |      |               |                                      |
|----------------------------|--------------|------|---------------|--------------------------------------|
|                            | केवडा        | भुरी | बुरशीजन्यकरपा | इतर                                  |
| 97                         | कमी          | कमी  | मध्यम         | जिवाणू करपा- जास्त.<br>तांबेरा – कमी |

ज्या भागात मुसळधार पाऊस झाला आहे, तेथे **बुरशीजन्य करपा** रोगाच्या नियंत्रणासाठी थायोफेनेट मिथाइल किंवा कार्बेन्डाझिम @१ ग्रॅम/लिटर फवारणी करावी. जमीन सुकल्याबरोबर ट्रायकोडर्माची ठिबक द्वारे ड्रिपिंग करावी. ट्रायकोडर्माची @३-४ मिली/लिटर प्रमाणे पानांवर फवारणी करावी. पानांवर पाणी/ओलावा असल्यास, केवडा नियंत्रणासाठी मॅकोझेब @३-५ किलो/एकर धूळ फवारणी करावी. या टप्प्यावर कॉपर हायड्रॉक्साईड @१.५ ग्रॅम/लिटर फवारणी केल्यास केवडा रोगापासून संरक्षण मिळेल. जिवाणूजन्य **करपा** रोगाचा प्रादुर्भाव जास्त असू शकतो आणि जिवाणूजन्य **करपा** आणि **बुरशीजन्यकरपा** या दोन्हीच्या संसर्गावर नियंत्रण मिळवण्यासाठी कासुगामायसिन + कॉपर ऑक्सीक्लोराईड @०.७५ ग्रॅम/लिटरची तात्काळ फवारणी करावी. या टप्प्यावर कोणत्याही आंतरप्रवाही बुरशीनाशकांची आवश्यकता नाही. भुरी रोगाचा प्रादुर्भाव दिसून आल्यास सल्फर ८० डब्ल्यूडीजी @२ ग्रॅम/लिटरची एक फवारणी करावी. काही फळबागांमध्ये पाणी साचल्यामुळे, पाणी ओसरल्यावर तांबेरा रोग दिसून येऊ शकतो आणि या रोगावर नियंत्रण मिळवण्यासाठी क्लोरोथॅलोनिल @ २ ग्रॅम/लिटर या प्रमाणात फवारणी करणे आवश्यक असेल.



## V कीड आणि त्याचे व्यवस्थापन परिषद-राष्ट्रीय द्राक्षा संशोधन केंद्र, पुणे



- अनुकूल हवामानामुळे मिलीबगचा प्रादुर्भाव दिसून येऊ शकतो. पिढ्या ढेकणांच्या नियंत्रणासाठी व्यापक-स्पेक्ट्रम कीटकनाशकांचा वापर टाळावा. मिलीबग नियंत्रणासाठी बुप्रोफेझिन २५ एससी @ १.२५ मिली प्रति लिटर पाण्यात मिसळून द्यावे. क्लॉटिसिलियम, मेटारिझियम, ब्युव्हेरिया यांसारख्या जैविक नियंत्रण घटकांची प्रतिबंधात्मक फवारणी खोड आणि वेलीच्या मुख्य फांद्यांवर करावी. वेलीच्या काड्यांवर मिलीबगचा प्रादुर्भाव झाल्यास, इमिडाक्लोप्रिड १७.८ एसएल @ ०.४ मिली प्रति लिटर पाण्यात मिसळून पानांवर फवारणी करावी.
- थ्रिप्स किंवा अळीचा प्रादुर्भाव झाल्यास, वेलींवरील अतिरिक्त पालापाचोळा (कॅनॉपी) काढून टाकावा. नियंत्रणासाठी फिप्रोनिल ८० WG (०.०६२५ ग्रॅम प्रति लिटर) किंवा इमामेक्टिन बेंझोएट ५ SG (०.२२ ग्रॅम प्रति लिटर पाणी) यांची फवारणी प्रभावी ठरते. अळीचा प्रादुर्भाव कमी करण्यासाठी पतंगांचे नियंत्रण करणे आवश्यक आहे; यासाठी द्राक्षाच्या बागेबाहेर प्रकाश सापळे (लाईट ट्रॅप्स) बसवता येतील. थ्रिप्सच्या नियंत्रणासाठी, काडी (केन) परियक्व झाल्यानंतर अतिरिक्त वाढ काढून टाकावी.
- कोळी (माईट) चा प्रादुर्भाव दिसून येऊ शकतो, त्यामुळे बागेचे बारकाईने निरीक्षण करावे. कोळीचा प्रादुर्भाव आढळल्यास, सल्फर ८० WDG (१.५ ते २.० ग्रॅम प्रति लिटर) किंवा अॅबामेक्टिन १.९ EC (०.७५ मिली प्रति लिटर पाणी) यांचा वापर प्रभावी ठरतो.

- द्राक्ष बागांमध्ये 'रेड कलर स्टेम बोरर' (*Dervishiya cadambae*) या किडीने फांद्यांच्या सालीखाली अंडी घालण्यास आणि प्रादुर्भाव करण्यास सुरुवात केली आहे. या किडीच्या पतंगांचे नियंत्रण करण्यासाठी द्राक्ष बागांजवळ प्रकाश सापळे (light traps) लावावेत. खोड आणि कॉर्डन्सवरील सैल झालेली साल काढून टाकावी आणि जुलै ते सप्टेंबर या कालावधीत महिन्यातून किमान एकदा 'मेटारायझियम' (*Metarhizium*) या जैविक घटकाचा (३-५ मिली प्रति लिटर पाणी) वापर करून खोड व कॉर्डन्स धुवून घ्यावेत (wash द्यावा). जर प्रादुर्भाव दिसून आला, तर सैल झालेली साल काढून टाकावी आणि 'मेटारायझियम' (३-५ मिली प्रति लिटर पाणी) वापरून खोड व कॉर्डन्स धुवावेत; यासाठी प्रति झाड १.५ ते २ लिटर द्रावण वापरावे.
- 'स्केल इनसेक्ट' (खवले कीड) चे नियंत्रण करण्यासाठी, बाधित द्राक्ष वेळींवरील सैल झालेली साल काढून टाका आणि स्केल कीटक हाताने खरवडून काढा. त्यानंतर, बाधित वेळींचे मुख्य खोड आणि कॉर्डन्स (फांद्या) 'इमिडाक्लोप्रिड १७.८ एसएल' (०.४ मिली प्रति लिटर पाणी) आणि 'मेटारायझियम अॅनिसोप्लिए' (३ मिली प्रति लिटर पाणी) यांच्या मिश्रणाने धुवून काढा.



भारतीय कृषी संशोधन परिषद-राष्ट्रीय द्राक्ष संशोधन केंद्र, पुणे  
ICAR-National Research Centre for Grapes, Pune

